

19. गतास्तरणा ख्या Pāṇāt. 36, 12. — e) hervorgegangen: तिर्यग्योनिगत R. 4, 56, 10. तस्माद्देहा गतः पुमान् Kathās. 2, 11. — f) gekommen: प्रति-  
कूले गते देवे विनाशे समुपस्थिते R. 6, 8, 15. Vgl. गतात्. — g) gegangen  
nach, zu; gelangt zu, gekommen zu, in; gerathen in, sich befindend auf,  
in, bei; enthalten in, ruhend in; die Ergänzung α) im acc. P. 2, 1, 24.  
ते गतास्त्रिदिवं दिवः AV. 10, 10, 32. M. 3, 159. N. 2, 12. 5, 38. R. 1, 60, 16.  
सोमतीर्थम् Çāk. 7, 16. समीपम् Hit. 14, 17. दृक्पथम् zu Gesicht gekom-  
men Vikr. 95. प्रासादं वा रक्षे गतः M. 7, 147. सभाम् 8, 95. वाणानिकृता-  
नि शिरांसि दिषताम् — स्फुरत्याकुक्षितोष्ठानि गो गतानि R. 3, 31, 21.  
MBh. 2, 458. पुत्रास्तस्य गता नृपः R. 1, 57, 13. भर्तारम् zu einem Gatten  
gelangt Çāk. 88. (आदिपथम्) मध्यं नभसो गतम् M. 4, 37. स्मश्रूणि गता-  
न्यास्यम् in den Mund gerathene Barthaare 5, 141. पञ्चाशतं गता zu  
50 (Joḡana) angewachsen R. 5, 6, 19. मनो हि मम तां गतम् N. 6, 3. —  
β) im loc.: यस्मिन् (पदे) गता न निवर्तन्ति भूयः Bhāg. 15, 4. कान्यकुब्जे ग-  
ताः Pāṇāt. 244, 2. क्वं ऋते पूर्व्यं गतम् RV. 1, 103, 4. गतानां तत्र वै पूतां  
चक्रे R. 1, 9, 31. क्व नु राजन्तो ऽसि N. 12, 8. Vid. 156. तत्र गताय da-  
selbst befindlich Çāt. Br. 8, 4, 1, 24. आचयोः कुशलं सर्वत्र गतम् N. 2, 15.  
क्व तद्वत् was ist daraus geworden? wie steht es damit? 24, 14. Daçak.  
66, 8. — γ) im acc. mit प्रतिः पश्य लक्ष्मण वैदेह्या मृगं प्रति गतो (so ist  
st. प्रतिगतो zu lesen) स्पृक्षाम् auf die Gazelle gerichtet R. 3, 49, 12 und  
Benf. Chr. 66, 12. — δ) im comp. vorangeh. P. 2, 1, 24. नन्दिग्रामगतः Ragh.  
12, 18. चलालं Kāt. Çr. 25, 13, 24. अशोकवनिका R. 1, 1, 71. प्रासादं N.  
13, 24. पङ्कं Mṛkṣh. 149, 3. सरो Ragh. 3, 66. भूमिं M. 3, 246. 5, 128.  
अक्षरितं 7, 29. R. 3, 8, 6. 9, 5, 8. आकाशगता वाणी Vid. 112. जालातर-  
गते भानौ M. 8, 132. नाकपृष्ठगतं यशः Çāk. 98, 9. विश्वामित्रं der sich zu  
V. gesellt hat R. 1, 24, 4, 7. रथं im Wagen sitzend, stehend 3, 28, 33.  
34, 4 (statt वाणैरथ गतः zu lesen: वाणी रथगतः). विराधाङ्कं 7, 25. पा-  
र्यं 31, 10. तूष्णगतेः शैः 2, 100, 20. पत्किञ्चिन्नगतीगतम् alles was sich  
in der Welt befindet M. 1, 100. ब्रह्मचारिगतं भैक्ष्यम् 5, 129. वक्त्रेः — यो-  
निगतस्य Çvetāçv. Up. 1, 13. आदित्यगतं तेजः Bhāg. 15, 12. आद्यं, तुर्यं,  
अत्यं an erster, vierter, letzter Stelle stehend Çrut. 12. वेदं an vier-  
ter Stelle stehend 13. कायगतं ब्रह्म M. 11, 97. गुरुगतां विद्याम् 2, 218.  
सर्वगत (अनामय) überallhin verbreitet N. 2, 14. कृद्गतश्चैव भावस्ते R. 3,  
19, 17. कामान् — मनोगतान् Bhāg. 2, 55. Çāk. 89. तद्वतेनैव मनसा mit  
darauf gerichtetem Sinne R. 1, 2, 30. 77, 25. तद्वतेनैव चेतसा Kathās. 3,  
68. मद्गतप्राणाः Bhāg. 10, 9. पुत्रगतं स्नेहम् auf den Sohn gerichtete Liebe  
R. 1, 21, 14. तद्वतो विधिः 2, 52, 61. तद्वते (bei dir stehend, dir gehörig)  
चैव मे राक्ष्यं जीवितं च धनानि च 5, 91, 24. मद्गतानि च ज्ञानीहि सर्वास्त्रा-  
णि Arś. 4, 31. — h) in einen Zustand, eine Lage, ein Verhältniss gera-  
then, sich darin befindend; die Ergänzung α) im acc.: अथ यो ऽभयं गतो  
भवति Taitt. Up. 2, 7. अनयम् M. 10, 95, 102. संयोगं पतितैः 3, 157. तयम्  
N. 26, 12. Vid. 257. Daç. 1, 46. धर्मरात्रवशम् 2, 26. Sāv. 5, 16. अंबुद्विं R.  
4, 1, 23. मरुडपालम्भम् Çāk. 59, 14. खेदम् Kathās. 5, 126. वृषलत्वम् M.  
10, 43. चाण्डालताम् R. 1, 58, 15. प्रेष्यताम् N. 16, 1. सङ्कारताम् Mālav.  
71. निष्प्रभताम् R. 1, 53, 9. Çāk. 59. Pāṇāt. II, 54. — β) im loc.: कृच्छ्रे-  
ष्वपि गतः R. 1, 58, 19. — γ) im comp. vorangehend: आपद्गत M. 9, 283.  
Çāk. 49, Sch. व्यापद्गत AK. 3, 4, 18, 131. — i) gehend auf, bezüglich auf;  
am Ende eines comp.: वयमपि तावद्भवत्यौ सखीगतं पृच्छामः Çāk. 14, 10.

शकुन्तलागतमेव चित्तयति 71, 18. मृगवतीगतं सर्वं शशंस Kathās. 9, 36.  
Vedāntas. in Benf. Chr. 204, 3. — k) betreten, besucht: भर्तृपुत्रगते पथि  
R. 2, 52, 53. मुहूर्ततां गतिम् Kumāras. 4, 24. गतो ग्रामो देवदत्तेन P. 3, 4,  
72, Sch. — l) verbreitet, bekannt, = विज्ञात Med. t. 13. भीमेति शब्दे  
ऽस्य गतः पृथिव्याम् Draup. 7, 10. पतिः सेनाभित्पद्मयोगता in der Bedeu-  
tung von ... bekannt H. ad. 2, 177. — 2) n. a) Gang, Art zu gehen: ग-  
तेन भूमिं प्रतिकम्पयन् MBh. 4, 297. वैद्यसगत R. 2, 27, 9. गतमुपरि घ-  
नानाम् Çāk. 166. Vikr. 95. Ragh. 2, 5, 18. Kirāt. 5, 47. गजानां मध्यमे गते  
AK. 3, 4, 24, 150. — b) der Ort wo Jmd gegangen ist: इदमेवां गतम् P. 2,  
2, 13, Sch. 3, 68, Sch. 3, 4, 76, Sch. — c) Verbreitung, Erstreckung, Be-  
kanntsein: यावन्नासो गतम् Khānd. Up. 7, 1, 5. — d) Art und Weise P. 1,  
3, 21, Vārtt. 5. = प्रकार Sch. — Vgl. अगत, एवंगत, काटगत.

caus. गर्मयति P. 2, 4, 46. Vop. 18, 22. 1) Jmd (acc.) zum Gehen oder  
Kommen veranlassen; herbeiführen; zu Jmd (dat.) befördern; Jmd (acc.)  
an einen Ort (acc.) bringen (P. 1, 4, 52); in einen Zustand (acc.) ver-  
setzen: गमयति देवदत्तं यज्ञदत्तः P. 1, 4, 52, Sch. स्वयं कृ रथेन यातीति । उ-  
पाध्यायं पदातिं गमयति 8, 1, 60, Sch. तेन तमेवं गमितो मया MBh. 18,  
95. अन्नं गमयति प्रेताङ्कापो ऽग्निनृत्तं ध्रुवः M. 3, 230. तस्मा एवमयामः  
AV. 16, 6, 4. अमृन्पितृभ्यो गमयो चकार 18, 2, 27. सूर्यं चतुर्गमयतात् At.  
Br. 2, 6. परावतं सपत्नीम् RV. 10, 143, 4. 152, 4. AV. 2, 23, 5. तत्र कृत्वा-  
नि गमय (Padap.: गमय) RV. 5, 5, 10. पितृलोकम् AV. 18, 4, 64. 12, 3,  
34. VS. 8, 44. Çāt. Br. 13, 2, 9, 7. 14, 4, 1, 11. 9, 1, 18. असतो मा सद्गमय  
तमसो मा ज्योतिर्गमय 30. Praçnop. 4, 4. ताम् — समुद्रं गमयिष्यति MBh.  
3, 493. वैवस्वतन्तयम् 2, 2557. Daçak. in Benf. Chr. 201, 13. गमयिष्ये  
MBh. 3, 625. गमित so v. a. गमितो यमन्तयम् 12, 1042. कोटरम् — गमिते  
Mālav. 60. शरीरं निरुत्पाविष्यो गमयित्वा Çāt. Br. 14, 7, 2, 4. स एवैन् भू-  
तिं गमयति TS. 2, 1, 1, 1. ज्येष्ठां ज्येष्ठां राज्यमाधिपत्यम् Khānd. Up. 5, 2, 6.  
एकताम् 6, 9, 1. उत्तमां गतिम् M. 5, 42. विलयम् MBh. 1, 8280. दास्यम् 3,  
1360. पराभवम् (med.) 8, 3800. तयम् 13, 12. इमामवस्थाम् 5. Bhārt. 3,  
49. Vikr. 137. Amar. 24. Bhāg. P. 8, 4, 13. Kir. 2, 7. अगमि मद्म् Vop. 24,  
13. — 2) zubringen (die Zeit): इमामुग्रातपां वेलां प्रायेण — गालिनीती-  
रेषु — गमयति Çāk. 32, 13. fgg. कालम् Pāṇāt. II, 161. दिनम् 206, 16.  
मासानेतागमय चतुरो मीलपित्वा लोचने Megh. 109. Ragh. 8, 24. Amar.  
23. — 3) herbeiführen, verteilen: गमयिष्यामि शक्रेण समतामपि ते धु-  
वम् MBh. 14, 179. — 4) zum Verständniss bringen, erklären: स्वधर्मस्थः  
परं धर्मं बुध्यस्व गमयस्व (West.: sequi, obsequi) च MBh. 3, 11290. न प्र-  
तिवदं गमयति वक्ति न वा प्रश्नमेकमपि पृष्टः । निगदति न च शिष्येभ्यः  
कथं स शास्त्रविद्वेषः ॥ Varāh. Brh. S. 2, 1. टीकयति गमयत्यर्थादीका H.  
236, Sch. — 5) eine Bedeutung hervorgerufen, bezeichnen: यत्रोद्यमने  
वयो गमयति P. 3, 2, 10, Sch. दौ निषेधौ प्रकृत्यर्थं गमयतः (könnte auch  
zu 1. gestellt werden) Çāk. zu Çāk. 10, 6. — caus. vom caus. गमयति  
Jmd (acc.) durch Jmd (instr.) zum Gehen bringen P. 1, 4, 52, Sch.  
intens. ब्रह्मयते, ब्रह्मयीति P. 7, 4, 85, Sch. Vop. 20, 17. ईङ्गति Naigh.  
2, 14. Vop. (आ) गनीगति Naigh. P. 7, 4, 65. besuchen: यद्वातो अयो अग-  
नीगन् (Accent unrichtig: TS.: अगमत्) VS. 23, 7. रथं सर्वना गनीगमतम्  
RV. 10, 41, 1.  
desid. जिगमिषति P. 2, 4, 47. 7, 2, 58. जिगमिषिता, जिगमिषितुम्  
Vārtt. 1, Sch. जिगमिषते Siddh. K. zu P. 6, 4, 16. 1) gehen wollen, im